नमाज़ का भायदा

सलाहुददीन

नमाज इस्लाम का दूसरा स्तंभ है और हर बालिग़ मुसलमान मर्द और औरत पर फर्ज़ है। यानी नमाज़ एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। नमाज़ छोड़ने वालों या न पढ़ने वालों के लिये कड़ी चेतावनी आई है। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः किसी आदमी के ईमान और कुफ्र व शिर्क के बीच अन्तर करने बल्कि चीज़ नमाज़ है।

नमाज़ इन्सान के जीवन में पेश आने वाली समस्याओं का समाधान और एलाज है। नमाज़ इन्सान के दिल में रिक़्क़त (नर्मी) पैदा करती है और सख्ती को खतम करती है, नमाज़ सुख और सन्तुष्टि देती है और खुशी से सुसज्जित करती है। नमाज़ उसके पालनहार की तरफ से एक बहुमूल्य नेमत है यह मोमिन के लिये शरण है। नमाज़ इन्सानों के लिये आंखों की ठण्डक है, नमाज़ सुस्ती और काहिली को दूर करके चुस्ती और उर्जा पैदा करती है इसी लिये नमाज़ को दीन का स्तंभ करार दिया गया है। नमाज़ न पढ़ने वाला इस्लाम की बुनियादों को कमज़ोर और नमाज़ पढ़ने वाला इस्लाम की बुनियादों को मजबूत कर रहा है। नमाज़ इन्सान के गुनाहों को उसी तरह से मिटा देती है जिस तरह पतझड़ के मौसम में पेड़ों के पत्ते हवाओं के झोंके से झड़ते हैं। एक बार पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो से संबोधित करते हुए फरमाया ऐ अबू हुरैरा भला बताओ कि अगर किसी के घर के सामने कोई नहर बह रही हो और वह रोज़ाना इस में स्नान करता हो नहाता हो तो क्या उसके शरीर पर कोई मैल कुचैल बाकी रहेगा। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लहो अन्हो ने जवाब दिया कि हर्गिज़ नहीं। फिर पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इसी तरह जब कोई शख्स पांचों वक़्त की नमाज़ पढ़ता है तो उसके ऊपर कोई गुनाह बाक़ी नहीं रहता। (बुख़ारी)

नमाज़ की खूबी यह है कि नमाज़ की हालत में राजा व रंक, मालदार और गरीब सब बराबर हो जाते हैं, यानी एक ही सफ में खड़े नज़र आते हैं, नमाज़ में किसी को किसी पर कोई वरीयता नहीं होती।

एक ही सफ में खड़े हो गये महमूद व अयाज

न कोई बन्दा रहा न कोई बन्दा नवाज़

कुरआन में नमाज़ की अहमियत को इस तरह से बयान किया गया है कि "वह मोमिन कामयाब है जो अपनी नमाज़ों को खुशू व खुजू से अदा करते हैं" (सूरे मोमिनून-१-२)

इसके विपरीत जो नमाज़ में गफलत और सुस्ती करते हैं वह दुनिया में घाटा पाने वाले हैं और आखिरत (मरने के बाद वाले) जीवन में भी अपमानित हों गे।

नमाज़ इन्सान को बुराइयों से रोकती और दूर रखती है। कुरआन में अल्लाह ने फरमाया "बेशक नमाज़ बेहयाइयों और बुराइयों से रोकती है" (सूरे अन्कबूत-४५)

मासिक

इसलाहे समाज

नवंबर 2020 वर्ष 31 अंक 6

रबीउल आख़िर 1442 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली सलफ़ी

संपादक

एहसानुल् हक़्

❑ वार्षिक राशि	100 रुपये
❑ प्रति कापी	10 रुपये
❑ टोटल पेज	28

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613
RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से भारत आफसेट 2035 क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: एहसानुल् हक्क़्

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. नमाज़ का भायदा 2
2. अपने मक़सद को याद रखें 4
3. एलाने दाख़िला 5
4. मदारिस इस वक़्त हमारे ध्यान के महत्वपूर्ण केन्द्र 6
5. ख़बर की छान बीन 11
6. कठिनाइयों के कारण 12
7. पैगम्बर मुहम्मद स० के ईश्दूत... 13
8. इश्तेहार 16
9. इस्लाम धर्म अम्न व शान्ति का ... 17
10. हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया 20
11. प्रेस रिलीज़ 21
12. प्यारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्ल 22
13. इस्लाम और सदाचार 24
14. इस्लाम में नारी का स्थान 25
15. भलाई और सफलता की राह 26
16. अगर मज़दूर मेरे देश के मरते रहे यूं ही 27
17. कलैन्डर 2021 28

ईमेल:-
Jaridahtarjuman@gmail.com
Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

अपने मक़सद को याद रखें

नौशाद अहमद

यह हक़ीक़त हमें स्वीकार करना होगा कि हमारी आज की पीढ़ी अपने असल मक़सद से दूर होती जा रही है, अधुनिक शिक्षा की अहमियत से इन्कार नहीं किया जा सकता है लेकिन इसके साथ ही हमारी पहचान बाकी रहनी चाहिए। लाकडाउन में सन्देवनशील लोगों ने छुटिटयों का भरपूर स्तेमाल किया लेकिन बहुत से लोग फुर्सत के इन क्षणों में बहुत गाफिल रहे। आज की शिक्षा ने हमें बहुत से महत्वपूर्ण मामलों और धार्मिक कर्तव्यों से गाफिल कर दिया है जबकि आधुनिक शिक्षा के साथ कुरआन का अध्ययन, उसकी तिलावत, उर्दू जुबान की तालीम जिस में हमारा बहुत कीमती सरमाया (पूंजी) मौजूद है, आधुनिक शिक्षा से कहीं ज्यादा अहमियत रखता है लेकिन हमारी गफलत की यह हालत है कि हम लोग कुरआन की तालीम, नमाज की पाबन्दी और उर्दू जुबान की तालीम से धीरे धीरे दूर होते चले जा रहे हैं। आज देखा जा रहा है कि जिन घरों से कुरआन की तिलावत की आवाज आनी चाहिए आज वहां से गाने और म्यूजिक की आवाज सुनाई पड़ती है, पहले अजान होते ही लोग मस्जिदों का रूख़ करते थे, नमाज़ की पाबन्दी करते थे लेकिन आज नमाज तिलावत और दूसरी इबादतों से गफलत बढ़ती जा रही है। दुनियावी काम को वरीयता देने का रूझहान बढ़ता जा रहा है, मस्जिदें वीरान होती चली जा रही हैं।

ऐसे में हमें यह सोचना चाहिए कि इस तरह की स्थिति क्यों पैदा हो गई है, और लोग मस्जिदों से क्यों दूर होते चले जा रहे हैं? कुरआन में नमाज़ को काइम करने का हुक्म दिया गया है, नमाज़ को क़ाइम करने का मतलब यह है कि स्वयं भी नमाज़ पढ़ें और आप के आस पास में जो लोग नमाज से गाफिल हैं, मस्जिद नहीं जा रहे हैं उनको नमाज़ पढ़ने के लिये प्रेरित करें, नमाज़ की अहमियत से आगाह करें, इसी तरह कुरआन की तिलावत का एहतमाम पाबन्दी से करें, अब तो मोबाइल में कुरआन ऐप को लोड करके कभी भी कुरआन की तिलावत की जा सकती है, सफर करने के दौरान भी तिलावत की जा सकती है।

अल्लाह ने आधुनिक युग में जो नेमत दी है उसका सहीह स्तेमाल किया जाए, लोग उर्दू न जानने का बहाना करते हैं, जब कि हकीकत यह है कि हम लोग दूसरी जुबान सीखने के लिये मोटी-मोटी रक़में खर्च करते हैं, लेकिन जब उर्दू और अरबी जुबान सीखने की बात आती है तो लापरवाही का इज़हार करते हैं, जबकि अपने घर के आस पास की मस्जिदों के इमाम से बच्चों को अच्छी तरह से कुरआन और उर्दू तालीम आसानी से दिलाई जा सकती है, यह सब हमारी गफलत है, गफलत की जाल से निकलइये और आधुनिक शिक्षा के साथ अपने कीमती सरमाये को भी हासिल करने का प्रयास की जिए यह समझ लीजिए कि हमारी कोई कीमती चीज गुम हो गई है और हम उसे ढूढ़ने के लिये हर संभव उपाय अपना रहे हैं।

अगर इस ख्याल से भी दीनी बातों को जानने की कोशिश करें गे तो इन्शाअल्लाह हमें कामयाबी ज़रूर मिलेगी।

बहुत से लोग कहे और सुने जाते हैं कि उर्दू पढ़ने से क्या फायदा इससे तो रोज़गार नहीं मिलेगा, लेकिन हर इल्म सिर्फ रोज़गार के लिये नहीं सीखा जाता है, उर्दू और अरबी हमें इस मक़सद से भी सीखना चाहिए कि इस में इस्लाम की कीमती पूंजी मौजूद है, जिस को संभालना और सजोना जिम्मेदारी होने के साथ हमारा धार्मिक कर्तव्य भी है। जो लोग उर्दू अरबी जानते हैं वह अपने पास पड़ोस के बच्चों को उर्दू और अरबी की अहमियत से आगाह करें, इसके बारे में बताते रहें, बार बार कहने से कुछ न कुछ परिणाम निकल ही जाता है वक़्त का सहीह स्तेमाल करने की आदत डालें, वक़्त को बर्बाद न करें, खुद भी सीखें दूसरों को भी सिखएं, नमाज़ को हर हाल में अदा करें, तालीम का सिलसिला जारी रखें और अपने इस असल मक़सद को याद रखें कि मरने के बाद हमारा हिसाब किताब होने वाला है।

एलाने दाख़िला

(मदारिस से फ़ारिग़ तलबा के लिए)

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के जेरे एहतमाम अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में स्थापित उच्च शैक्षिक एवं प्रशिक्षण संस्था

अलमाहदुल आली लित तख़स्सुस फ़िद दिरासातिल इस्लामी

में नये तालीमी कलैण्डर के अनुसार इस साल नये सत्र के लिये एडमीशन जारी है। अपना अनुरोध पत्र व सनद की फोटो कापी इस पते पर भेजें। और दाख़िला इमतिहान की तारीख़ का इन्तेज़ार करें।

अधिकृत जानकारी के लिये संपर्क करें।

अहले हदीस कम्पलैक्स डी.254 अबुल फजल इन्कलेव
जामिया नगर, ओखला, नई दिल्ली-110025
फोन 011-26946205 , 011-23273407
Mob. 9213172981, 09560841844

शिक्षा एवं प्रशिक्षण विभाग

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

मदारिस इस वक़्त हमारे ध्यान के महत्वपूर्ण केन्द्र

असगर अली इमाम महदी सलफी
अध्यक्ष, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

यूं तो इस वक़्त बहुत से मामले और समस्याएं हैं जो हमारे ध्यान का केन्द्र हैं मगर इन में तात्कालिक और महत्वपूर्ण ध्यान देने योग्य मसला मदर्सों के अस्तित्व व स्थिरता का है जिस पर हमारा ध्यान केन्द्रित होना चाहिए क्योंकि दीन के यह क़िले इस्लामी मदारिस हमारी बाइज़्ज़त, बाईमान और बाशरअ ज़िन्दगी की ज़मानत और कुरआन व हदीस की हिफाज़त का अहमतरीन ज़रीआ हैं। आप ग़ौर करें तो अल्लाह की क्षमता व शक्ति से उनही के कारण हम दीन व ईमान और शरीअत पर काइम हैं। इस गए गुज़रे और भौतिकता से ग्रस्त दौर में भी आध यात्मिकता से जो हमारा लगाव है और जो कुछ हमारे जीवन का सरमाया और आख़िरत का ज़खीरा है वह इन मदर्सों की वजह से है कि इन मदर्सों के सबब हमारी मस्जिदों की अजानें और सदाएं हैं, उनके मीनारों और मुअज्जिनों से अल्लाहो अकबर की दिलनवाज़ सदाएं (आवाज़ें) सुनाई देती हैं। उन्हीं के वजूद से मिंबर व मेहराब इस वक़्त तमाम तर खामियों के बावजूद काइम हैं। इन ही के सपूतों के वजूद से हमारा एतबार क़ाइम है। हमारे पूर्वज और असलाफ के १४ सौ साल के महान ज्ञानात्मक, धार्मिक, सांस्कृतिक और तहज़ीबी वरासत की एमानत तमाम कमज़ोरियों के बावजूद इन ओलमा के दम से महफूज़ व मालूम हैं जिस पर हम उचित रूप से गर्व कर सकते हैं। हलाल व हराम की पहचान व अन्तर वास्तव में इनही मदर्सों की वजह से क़ाइम है। अच्छे बुरे की पहचान, उनकी सीमाएं, शराएत, फराइज़ व वाजिबात इन तालीमाते रब्बानी व ईमानी की वजह से हैं जो मदर्सों में दी जाती हैं। शिष्टाचार, आदाब और सीरत व किरदार की अहमियत व ज़रूरत इनही मदर्सों की वजह से दिल व जिगर में मौजूद है और इससे सुसज्जित होने की फर्ज़ियत और अफज़लियत को निभाने और अपनाने में इन मदर्सों की भूमिका ही असल है। और "इन्नका ल-अला खुलिक़न अजीम" की तालीम व उस पर अमल इनही मदर्सों के ज़रिये आम की जाती है। भलाई और आत्मशुद्धि हमारे ईमान की जड़ और बुनियाद है और जो हमारे इस शरीर में आत्मा की हैसियत रखते हैं वह इन्हीं प्रशिक्षण व शिक्षा केन्दों से विकसित होते हैं। इबादत व मामलात, व्यापार एवं अर्थ व्यवस्था, अख़लाक़ियात व सियासियात, समाजियात और जीवन की आवश्यकताएं और तमाम मामलों में सफल दीनी रहनुमाई मदर्सों के ही माध्यम से है। शादी विवाह से लेकर अक़ीका और वलीमा और विभिन्न तक़रीबात (सभाओं और प्रोग्रामों) में भी दीनी रहनुमाई के बगैर हम मुकम्मल मोमिन बाकी नहीं रह सकते और कभी कभार इसका माध्यम हमारे लिये यह दीनी मदर्से और उनके सबंधित लोग हैं। नये नये चैलेंजों और आधुनिक समस्याओं,

अविष्कार, प्रोडक्ट्स, खाद्य पदार्थ और पीने की वस्तुए और पहनावे में मार्गदर्शन और जवाबदेही इन क़िलों और इसके वासियों और ज़िम्मेदारों के ज़रिये होती है। इन ही मदर्सों की देन है कि हमने न्याय, समता, भाई चारा और मुहब्बत के पैगाम को हमेशा साधारण किया। राष्ट्रीय सदभावना, आपसी भाई चारा और इन्सानियत नवाजी का पाठ दुनिया को सिखाया और हर तरह के पक्षपात और नफरतों की चलती हुई आंधी में भी इन्सानी भाई चारा और उदारता का वातावरण पैदा किया है जिसकी वजह से सब भाई भाई और संपन्न एवं समृद्ध हो गये।

यक़ीन कीजिए! यह क़िले स्वयं इसके क्षात्र, अध्यापक और इसके प्रशासक व सदस्यगण हैं और अहले खैर, शुभचिंतक इसके स्तंभ और बुनियाद की हैसियत रखते हैं क्योंकि मददर्सों के दरो दीवार अगर एक हाउस हैं तो अध्यापक एवं क्षात्र एक तरह से जिस्म व जान हैं और आप मुहसिनीन व मुख़ैयरीन (उपकारक एवं शुभचिंतक) इनकी रगों में दौड़ते हुए खून हैं क्योंकि कुछ बनावट हमारे इन क़िलों की ऐसी ही वाक़े हुई है। अगर इनका यह संयुक्त वजूद नहीं रहा तो गोया यह क़िले नहीं रहेंगे। बस सराब और ख़ुवाब रह जाएंगा जिसके पीछे हसरत व नाउम्मीदी और हिलाकत व घाटा के अलावा कुछ नहीं बचता। वह सामाने इबरत व ताज़ियाना भी नहीं कि वह ज़िन्दा क़ौमों की अलामत है क्योंकि ज़िन्दा कौमें ही पाठ पकड़ती हैं।

कहने का मकसद यह है कि मदर्सों की अहमियत व ज़रूरत कल के मुकाबले आज ज़्यादा है, उनकी ज़रूरतें भी बदलते जमाने और हालात के तहत दिन बदिन बढ़ते जा रहे हैं। कोरोना वायरस की इस महामारी और मुसीबत व आजमाइश के वक़्त में इन को विभिन्न तरह की चुनौतियों का सामना है और वह बड़ी तेज़ी से अजीब तरह की कशमकश, आशंकाओं और कसमपुर्सी की तरफ रवां दवां हैं अल्लाह न करे वह अपने वजूद व अस्तित्व के प्रयास में दो राहे पर खड़ा होने की पोजीशन में होते जा रहे हैं। हमें यह भी मालूम है कि इस के गए गुज़रे आख़िरी दौर ने भी उनके ओलमा हमारी पहचान, हमारी और हमारी नसलों की बक़ा व हिफाज़त के लिये रीढ़ की हडडी की हैसियत रखते हैं बाज कोताहियों की उपेक्षा करते हुए इनही से हमारा बहुत सा एतबार बाक़ी है। रह गया कुछ खामियों और कोताहियों का शिष्टाचार जिक्र तो हमें खुले दिल से इसका एतराफ करना चाहिए खास तौर से आत्मशुद्धि (तज़किया) उपकार, प्रशिक्षण, सदाचार, तक़वा व पवितत्रता जो हमारे पूर्वजों की पहचान रही है और जो ओलमा और मदर्सों के क्षात्रों का तरीका था इसके अभाव व कमी की शिकायत में तो मैं आप के साथ हो सकता हूं लेकिन इसे सिर्फ मदर्सों के जिम्मेदारों के सर डाल कर हम जिम्मेदारी से अलग नहीं हो सकते। बल्कि कहीं न कहीं क्षात्र, गारजियन और समाज भी इसका जवाबदेह है। और मेरा खयाल है कि हमारे अधिकतर मदर्सों के ज़िम्मेदार इस की जवाब देही और इसको फेस करने से नहीं हिचकिचाएंगे। लेकिन गौर करने का मक़ाम यह है कि क्या कोताहियों के वह्म व ख्याल में इस अहमतरीन काम को नज़र अन्दाज़ कर दिया जाए गा? भाई इस तरह तो दुनिया का कोई काम अंजाम नहीं पा सकता।

इसलिये ज़रूरत है सबसे पहले अपने आत्मनिरिक्षण और अपने कर्मों का जायज़ा लेने की, दीनी जमाअतों खास तौर से इन दीनी क़िलों मदर्सों के तईं अपनी जिम्मेदारियों को निभाने की और बहुत संजीदगी से गौर करने की कि हमने इस सेकुलर देश और बदलते हालात में अपने दीन व ईमान और नस्ल की हिफाज़त व बक़ा और आख़िरत में जवाबदेही के लिये उनके साथ क्या मामला किया और अपने हिस्से की कितनी जिम्मेदारी निभाई? उनके क्या अधिकार हैं, इनको जानने की कितनी कोशिश की? और कितने हुकूक अदा किए? ऐसा तो नहीं कि माल ज़कात से कुछ मदद कर दी और फर्ज़ अदा हो गया? क्या कभी सोचा आप ने कि आपने अपने माल को पाक और बाबर्कत करने के लिये अपना कर्तव्य अदा किया? लेकिन निजी तौर पर खालिस मदर्सों के लिये क्या किया? क्या उसकी ज़रूरतों को जानने की कोशिश की? उसकी देख रेख की? अधिकृत जान व माल की ज़रूरत पड़ने पर अपना असल माल और वक़्त खर्च किया और कभी ऐसा भी वक़्त आया कि आप ने अपनी ज़रूरत पर इसकी ज़रूरत को वरीयता दिया हो? यह तो आप का फर्ज़ था और आपके असलाफ (पूर्वजों) का आदर्श था?

यह बात हर्गिज़ न भूलें कि कुरआन हदीस का सीखना और सिखाना फर्ज़ है और इस धरती पर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फरमान के अनुसार सबसे बेहतर काम है। "तुम में से सबसे बेहतर वह हैं जो कुरआन को सीखते और सिखाते हैं" लेकिन आप ने इस सब से बेहतरीन काम को अपने माल के मैल कुचैल से अंजाम दिया, क्या इस पर आपने कभी गौर किया? इसके लिये अगर हम अपना सबसे पाक़ीज़ा, महबूब तरीन माल और कीमती व नाइस माल खर्च करके रात दिन रोते और आह व ज़ारी करते कि अल्लाह अपने कलाम और नबी के फरमान को सिखाने और सीखने, उसके प्रचार व प्रसार के इस सबसे बेहतर काम के लिये मेरी इस कमतर सी पूंजी को कुबूल फरमा कर मुझ पर कृपादृष्टि फरमा और शुक्र गुज़ार बन्दों में बना। तब भी हक़ तो यह था कि हक़ अदा न हुआ। चेजाएकि मैल कुचैल जो फक़ीरों मिस्कीनों और मोहताजों और मुसाफिरों के लिये निर्धारित है, अपने सबसे अच्छे लोग क्षात्र, अध्यापक पर खर्च करके खुद साबित कर रहे हैं कि आप सबसे घटिया और निचले स्तर के लोग हैं फिर उनको इस स्तर पर ले जाने के बाद भी उनको कौम व मिल्लत का प्रतिष्ठित मार्गदर्शक, दीन व ईमान के बाइज्ज़त झण्डावाहक और ऐसा नेकोकार सहाबा जैसी खूबियों वाला और फरिश्तों से कम न हो तो हमें अपने व्यवहार पर तीन बार गौर करना चाहिए। इसी तरह हमारे क्षात्र और अध्यापकगण और मैनेजमेन्ट्स को भी ऐसे हालात में ईसार व कुर्बानी त्याग और हर तरह से सब्र व स्थिरता के साथ मुश्किल हालत में भी अपने इन फराइज़ व जिम्मेदारी को अदा करते रहना चाहिए। हमारे ओलमा, मुहद्दिसीन, बहुत से फुक़हा और दीन के प्रचारकों ने सूखी रोटियां खा कर इस इल्म को सीखा और सिखाया पढ़ा और पढ़ाया है यह आदर्श भी और असलाफ के यह अनमिट चिन्ह हर वक़्त हमारे सामने रहना चाहिए क्योंकि यही उनका तरीक़ा था। क्या हम इन हालात में भी इन दीनी

क़िलों और ईमानी केन्द्रों के लिये आने वाली नसलों की खातिर इतना भी नहीं कर सकते और क्या यह जिम्मेदारी सिर्फ अवाम और मोहसिनीन (शुभचिंतकों) के सर पर डाल कर जिम्मेदाररी से अलग हो सकते हैं। फिर नबियों के वारिस और असलाफ के उत्तराधिकारी होने के क्या माने हैं? और क्या अल्लाह के नजदीक और अवाम के नजदीक सख्त जवाब देही से बच पाएंगे? मुझे उम्मीद है कि इस संकट को और सख्त वक़्त में आप का संकल्प, स्थिरता, बलिदान, त्याग बुलंदियों पर होगा और सबकी स्थिरता और प्रगति का माध्यम बनेगा।

मेरे मुहसिनों और शुभचिंतक भाइयो! विभिन्न अवसर पर यह बात बहुत दर्दमन्दी से आ चुकी है कि उप महादीप में हमारे पूर्वज और असलाफ कितने दूरदर्शी थे कि उन्होंने आने वाली पीढ़ियों के ईमान को शक व शुबहात और अमल और आस्था को इरतिदाद से बचाने के लिये मदारिस के क़्याम को ज़रूरी समझा लेकिन लोगों के मैल कुचैल ज़कात से इतने अज़ीमुश्शान और महत्वपूर्ण फरीज़े की अंजामदेही यानी इन मदर्सों को चलाना कयों कर रवा रखा? जहां उनके विचार एवं व्यवहार पर सख्त हैरत और आश्चर्य होता है वहीं उनकी दूरगामिता और हिन्दुस्तान में अपनी आने वाली पीढ़ियों की बेहिस्सी, दीन से बेरग्बती, दुनिया और माल की मुहब्बत और दुनिया से दिलचस्पी को भांप और ताड़ लिया इस पर उनको खिराजे अकीदत पेश करने का भी दिल चाहता है क्योंकि उन्होंने ताड़ लिया था कि मुसलमानों में से दीन बेज़ार और जाहिल व दुनिया दार किस्म के लोग इन दीनी क़िलों से कोई सरोकार नहीं रख पाएंगे। इसी तरह इनमें दीनदार और ईमानदार मुसलमान भी अपना तन मन धन नहीं लगा पाएंगे मगर अल्लाह जिस पर दया करूणा का मामला करे। लेकिन कम से कम कुछ दीन की फिक्रमन्दी, कुछ अपने माल की पाकीज़गी और ज़कात की फर्ज़ियत उन्हें मजबूर करेगी कि इसको इन दीनी मदारिस पर खर्च करें और ज़कात से ही सही इन क़िलों के अस्तित्व और हिफाज़त का काम करते रहें। इसी दूर दर्शिता पर उनके लिये दिल से दुआ भी निकलती है। वैसे अल्लाह तआला अपने दीन का रक्षक और संरक्षक है और कुरआन व हदीस की हिफाज़त और खिदमत की क्षमता अपने उनही बन्दों को देता है जिन के मुकददर का सिकन्दर जागता है और जो इख़लास व एमानत के साथ इस की ख़िदमत करते हुए अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं।

मेरे भाइयो! अगर दीनी मदारिस की ख़िदमत और उस का सहयोग करने का सौभाग्य और बरकत हमारे हिस्से में आई है तो एहसान जताने के बजाये अल्लाह का शुक्र अदा करें वर्ना अपने दुर्भाग्य को कोसें और बार-बार रोएं। ऐ अल्लाह हमें ऐसे कामों की क्षमता दे जिस से हम तेरा महबूब बन जाएं और तू हम से राज़ी हो जाए, बेशक तू सुनने वाला और दुआओं को कुबूल करने वाला है।

इस लिये अपने तमाम मदारिस के शुभचिंतकों, हमदरदों, मुख्लिसों, देश व मिल्लत के पासबानों, कुरआन व हदीस के मुहाफिजों से मुखलिसाना, और सादर दर्दमन्दाना अपील है कि अपने तमाम खर्च के मद में और ज़कात व सदक़ात के मुसतहिक लोगों की सूचि में दीन के इन किलों को

वरीयता दें, अपने वजूद, अपने दीन व ईमान और दुनिया व आख़िरत में इज़्ज़त व शान की बक़ा और हिफ़ाज़त व कामयाबी के लिये इन मदर्सों को हर्गिज़ हर्गिज़ न भूलें और इनका कल के मुक़ाबले में आज जब कि आप भुकमरी मिटाने और विभिन्न मैदानों में अपने तन मन धन से लगे हुए हैं, मदारिस का ज़्यादा से ज़्यादा और भरपूर सहयोग करें। यही इमतिहान का वक़्त है आप के त्याग का कुर्बानी का, और ईमानी गैरत का, अल्लाह तआला आप का और आप के आल औलाद का, कारोबार का, उद्योग, व्यापार का रक्षक व मददगार हो, माल व दौलत में दिन दूनी रात चौगनी बरकत अता फरमाए और हर तरह की बुराई और फसाद, रोग ख़ास तौर से कोरोना वायरस जैसी महामारी और इससे उत्पन्न समस्याओं कठिनाइयों, और वबाल व जंजाल से बचाए और जो कुछ बज़ाहिर खसारा और नुकसान हुआ है इसकी भरपाई और क्षतिपूर्ति की सूरत अपने ग़ैब के ख़ज़ाने से कर दे।

ईं दुआ अज़ मन व अज़ जुमला जहां अमीन बाद

यानी, यह दुआ मेरी तरफ से है और पूरी दुनिया इस पर आमीन कहे।

❑ ❑ ❑

पाठक गण ध्यान दें

1-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। 2-अगर आपको हर महीने की 5 तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सुचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। 3-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। 4-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। 5- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। 6- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। 7. नए और पुराने सदस्यों से अुनरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये 3 बजे से 5 बजे तक फून करें। 011-23273407

ख़बर की छान बीन

एन. अहमद

किसी को बिना किसी दलील के गलत समझना पूरे समाज के लिये घातक है। एक इन्सान अपने बारे में कुछ सोचता है, दूसरा इन्सान दूसरे के बारे में कुछ और सोचता है, यह सोचने और समझने का अन्तर हमें यह बताता है कि किसी के बारे में राय काइम करने से पहले हर पहलू से गौर किया जाए।

दुनिया के किसी भाग में कोई अप्रिय घटना घटित होती है तो उसके बारे में लोग तरह तरह की राय काइम करते हैं, कोई इसको एक खास कम्यूनिटी से जोड़ देता है तो कोई इसे किसी एक व्यक्ति की निजी घिनावनी हरकत क़रार देता है। इस तरह की राय बनाना या राय देना इस पर निर्भर करता है कि हम किसी घटना को किस दृष्टिकोण और किस ऐन्गल से देखते हैं। दुनिया का कानून यही कहता है कि जिसने कोई गलत काम या अपराध किया है तो यह उसका निजी अपराध है इसको किसी कम्यूनिटी या विशेष वर्ग से जोड़ना इन्साफ नहीं है क्योंकि अगर किसी के गलत काम को उसके धर्म या उसके कम्यूनिटी से जोड़ दिया जाए गा तो इससे उसका धर्म और कम्यूनिटी बदनाम होगी। खेदजनक बात यह है कि कुछ लोग इस सोच को बढ़ावा देते हैं जब कि ऐसा करना सरासर गलत और विश्व कानून के भी खिलाफ है और इन्सान की अक़्ल भी यही कहती है कि जिसने जुर्म या अपराध किया उसी को इस अपराध से जोड़ा और इस के लिये उसी को ज़िम्मेदार क़रार दिया जाए।

विश्व स्तर पर इस तरह की सोच को बढ़ावा देना कुछ स्वार्थी लोगों का काम है वह अपना उल्लू सीधा करने के लिये सीधे साधे लोगों को भ्रमित करते हैं। किसी भी घटना के बारे में तात्कालिक राय काइम करने से इसी प्रकार की गलत फहमी जनम लेती है ऐसे में ज़रूरी हो जाता है कि दुनिया में घटित होने वाली किसी भी घटना के बारे में केवल एक माध्यम पर भरोसा न करके कुछ अन्य संसाधनों से भी यह जानने की कोशिश करें कि घटना की असल सच्चाई क्या है?

इस सिलसिले में इस्लाम ने स्पष्ट रूप से कहा है कि किसी खबर के बारे में कोई राय स्थापित करने से पहले उसके बारे में खूब अच्छी तरह से जांच पड़ताल कर लें, क्योंकि जाँच पड़ताल न करने के कारण बाद में बड़े पछतावे का सामना करना पड़ता है। कुरआन कहता है। ''ऐ ईमान वालो और कोई बदकार तुम्हारे पास कोई सूचना लाए तो तुम उस बात की तहकीक (छान बीन) कर लिया करो ऐसा न हो कि बेखबरी में तुम किसी कौम से उलझ पड़ो फिर तुम खुद भी अपने किए पर शर्मिन्दा हो जाओ'' (सूरे हुजरात-६)

इस आयत में एक महत्वपूर्ण सिद्धांत को बताया गया है कि हर शख्स और सरकार की ज़िम्मेदारी है कि उनके पास जो भी सूचना आए विशेष कर ऐसे लोगों की तरफ से जो भरोसे के काबिल न हों, पहले उस सूचना की छानबीन कर ली जाए इसके पश्चात ही कोई कार्रवाई की जाए ताकि अकारण किसी पर अत्याचार न हो।

कठिनाइयों के कारण

मौलाना अब्दुल मन्नान शिकरावी

यह हक़ीक़त है कि आज हम जिन कठिनाइयों और परेशानियों से गुज़र रहे हैं वह हमारे कुछ कुकर्मों का परिणाम है क्योंकि अल्लाह तआला गुनाहों की सज़ा देता है जैसा कि कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया "अल्लाह का एरादा यही है कि उन्हें उनके बाज़ गुनाहों की सज़ा दे ही डाले और अधिकांश लोग बेहुक्म ही होते हैं" (सूरे माइदा-४६)

अगर अल्लाह तआला हमारे तमाम कुकर्मों पर पकड़ करने लगे तो इस धरती पर एक भी जानदार न छूटता लेकिन अल्लाह तआला एक निर्धारित मुददत तक मोहलत देता है। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया "और अगर अल्लाह लोगों पर उनके कर्मों के सबब पकड़ करने लगता तो धरती पर एक जानदार को न छोड़ता लेकिन अल्लाह तआला उनको एक तय मुददत तक मोहलत दे रहा है इसलिये जब उनका वह वक़्त आ पहुंचे गा अल्लाह अपने बन्दों को आप देख लेगा" (सूरे फातिर-४५)

हम लोगों ने अल्लाह की नाफरमानी करके स्वयं अपने ऊपर जुल्म किया है जबकि अल्लाह तआला का यह नियम है कि वह जालिम को उससे बड़े जालिम के द्वारा सज़ा देता है, किसी को भी मोहलत और ढील से धोका नहीं खाना चाहिए क्योंकि वह कभी तुरन्त सज़ा देता है तो कभी ढील देकर देखता है जैसा कि कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया "और उनको मोहलत देता हूं, बेशक मेरी तदबीर (उपाय) बड़ी मज़बूत है"। (सूरे आराफ-१८३)

फरमायाः "और तेरे परवरदिगार की पकड़ उसी तरह है जब वह बस्ती वालों को पकड़ता है जो (अपने ऊपर) जुल्म करते रहते हैं बेशक उसकी पकड़ बड़ी दुख देने वाली और बड़ी ही सख्त है" (सूरे हूदः१०२)

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया "बेशक अल्लाह तआला जालिम को (चन्द रोज़) दुनिया में मोहलत देता रहता है लेकिन जब पकड़ता है तो फिर नहीं छोड़ता"। (बुखारी, मुस्लिम)

कठिन हालात में भी लोग बड़े असमंजस में रहते हैं वह कोई उचित कदम नहीं उठा पाते हैं और अल्लाह के इस फरमान को भूले रहते हैं। "जो मेरी हिदायत की पैरवी करे न तो वह बहके गा न तकलीफ में पड़ेगा" (सूरे ताहा-१२३)

दूसरी जगह फरमायाः

"जो शख्स तक़्वा अपनाए और दुरूस्ती करे सो इन लोगों पर न कुछ अन्देशा है और न वह गमगीन होंगे।" (सूरे आराफ-३५)

हमें अपने आप को बदलना चाहिए और अल्लाह के इस फरमान पर पूर्ण विश्वास होना चाहिए।

"किसी कौम की हालत अल्लाह तआला नहीं बदलता जब तक कि वह स्वयं इसे न बदलें, जो उनके दिलों में है। अल्लाह तआला जब किसी कौम को सज़ा का एरादा कर लेता है तो वह बदला नहीं करता और उसके सिवा उनका कोई भी कारसाज़ नहीं" (सूरे रअ़द-११)

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ईश्दूत और सन्देशवाहक होने की सत्यता पर कुछ अक़्ली तर्क

लेखकः अब्दुर्रहमान अश-शीहा

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कुछ ऐसी दुर्लभ घटनाओं का सामना होता था जिनके स्पष्टीकरण की आवश्यकता होती थी, किन्तु उसके विषय में आप पर वह्य न उतरने के कारण आप उसके संबंध में कुछ नहीं कह पाते थे। इसलिए वह्य उतरने से पहले की अवधि को आप दुःख, चिन्ता और शोक की अवस्था में बिताते थे। इसी में से एक इफ़्क (झूठे आरोप) की घटना है जिस में पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सतीत्व पर आरोप लगाया गया। चुनांचे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक महीना तक इस स्थिति में ठहरे रहे और आप के दुश्मन आप के बारे में अनुचित बातें करते रहे, आपके सतीत्व को निशाना बनाते रहे, यहाँ तक कि वह्य उतरी जिसने आपकी पत्नी (आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा) को उस आरोप से मुक्त और पवित्र घोषित कर दिया जिस से उनको आरोपित किया गया था। यदि आप मिथ्यावादी होते-और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कदापि ऐसा नहीं थे- तो इस समस्या का उसी समय समाधान कर देते, किन्तु वास्तविकता यह थी कि आप अपनी इच्छा से कोई बात नहीं कहते थे।

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने लिए मानव जाति से बढ़ कर किसी पद का दावा नहीं किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह बात पसंद नहीं करते थे कि आप के साथ कोई ऐसा व्यवहार किया जाए जो प्रतिष्ठा और महानता का प्रतीक हो। अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं सहाबा के निकट पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अधिक प्रिय कोई और नहीं था। तथा उन्होंने कहाः और जब वह लोग आप को देखते तो आप के लिए खड़े नहीं होते थे, इसलिए की वह जानते थे कि आप इस को पसन्द नहीं करते हैं। (सुनन तिर्मिज़ी)

वाशिंगटन इरविंग (W. Irwing) कहता हैः ''पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सफलताओं ने उनके अंदर गर्व एंव घमण्ड नहीं पैदा किया। वह केवल अल्लाह के लिए कार्य करते थे, किसी व्यक्तिगत (निजी) लाभ अथवा स्वार्थ के लिए नहीं। यहां तक कि महानता और श्रेष्ठता की चरम सीमा पर पहुंच कर भी पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी सामान्य सरलता, सहजता और नम्रता को संभाल कर रखा। यदि आप किसी कमरे में लोगों के समूह पर प्रवेश करते तो इस बात को नापसंद करते थे कि वह लोग आप के स्वागत के लिए खड़े हो जायें, या असाधारण रूप से आप का अभिनन्दन करें। आप ने न्याय के साथ शासन किया, और आपने यह नहीं सोचा कि शासन को अपने खानदान के लिए उत्तराधिकार बना दें।

कुरआन में कुछ आयतें ऐसी उतरी हैं जिन में पैग़म्बर मुहम्मद

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उनके किसी कार्यवाही या दृष्टि पर इस्लाह की गई है, उदाहरण स्वरूपः

''ऐ नबी! (ईश्दूत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) जिस चीज़ को अल्लाह ने आप के लिए हलाल कर दिया है उसे आप क्यों हराम करते हैं? (कया) आप अपनी पत्नियों की प्रसन्नता प्राप्त करना चाहते हैं? और अल्लाह तआला क्षमा करने वाला दया करने वाला है।'' (सूरा तहरीम-१)

इसकी पृष्ठभूमि यह है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी कुछ पत्नियों के कारण अपने ऊपर शहद खाना हराम कर लिया था। अतः आप के अल्लाह की हलाल की हुई चीज़ को अपने ऊपर हराम कर लेने के कारण आप के पालनहार की ओर से ऐसा करने से मना किया गया।

अल्लाह तआला का यह फरमान है। ''अल्लाह तुझे क्षमा कर दे, तूने उन्हें क्यों अनुमति दे दी? बिना इसके कि तेरे सामने सच्चे लोग खुल जाएं और तू झूठे लोगों को भी जान ले''। (तौबाः ४३)

इस आयत में अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस बात से रोका है कि आप ने तबूक में पीछे रह जाने वाले मुनाफ़िक़ों के झूठे बहानों को स्वीकार करने में जल्दी क्यों की? चुनांचे मात्र उनके क्षमायाचना करने पर ही उन्हें क्षमा कर दिया उनकी छान-बीन और जाँच-पड़ताल नहीं की ताकि सच्चे और झूठे की पहचान कर सकें।

''और तू अपने दिल में वह बात छुपाये हुये था जिसे अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था और तू लोगों से डरता था, हालांकि अल्लाह तआला इस बात का अधिक योग्य था कि तू उससे डरो'' (सूरा अहज़ाब-३७)

तथा अल्लाह तआला का फरमान हैः ''ऐ पैग़म्बर आप के अधिकार में कुछ नहीं।'' (सूरा आल-इम्रान-१२८)

तथा अल्लाह तआला का फरमान हैः ''उसने विमुखता प्रकट की और मुंह मोड़ लिया (केवल इसलिए) कि उसके पास एक अंधा आया। तुझे क्या पता शायद वह संवर जाता या उपदेश सुनता और उपदेश उसे लाभ पहुंचाता''। (सूरा अबस-१-४)

यदि आप मिथ्यावादी होते-और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कदापि ऐसा नहीं थे-तो यह आयतें जिन में पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की डांट-डपट और ऐसा करने से रोका गया है क़ुरआन में न होतीं।

लाईटनर (Lightner) अपनी पुस्तक इस्लाम धर्म, में कहता हैः ''एक बार अल्लाह तआला ने अपने नबी की ओर एक ऐसी वह्य अवतरित की जिस में आप की सख़्त पकड़ की गई थी, इसलिए कि आप ने अपने चेहरे को एक ग़रीब अंधे आदमी से फेर लिया था ताकि एक धनवान प्रभावशाली आदमी से बात करें। और आप ने उस वह्य का प्रसार किया और उसे फैलाया। यदि आप वैसे ही होते जैसा कि हक़ीक़त से बेखबर ईसाई आप के संबंध में कहते हैं, तो इस वह्य का वजूद न होता।''

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे नबी और पैग़म्बर होने तथा आप जो कुछ लेकर आये हैं उसकी सच्चाई का निश्चित प्रमाण सूरतुल-मसद् है जिसमें इस बात का निश्चित फैसला है कि आप का चाचा अबू-लहब जहन्नम में प्रवेश करेगा, और यह सूरत आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दावत के शुरू शुरू में उतरी है, अतः यदि आप मिथ्यावादी होते-और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कदापि ऐसा नहीं थे तो इस प्रकार

निश्चित फैसला न घोषित करते इसलिए कि हो सकता है कि आप का चाचा मुसलमान हो जाये?

डा० गेरी मिलर (Gary Miller) कहता हैः यह व्यक्ति अबू-लहब इस्लाम से इस हद तक घृणा करता था कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जहां भी जाते वह आप के पीछे-पीछे चलता ताकि जो कुछ पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कहते उसके महत्व को कम कर सके। यदि पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपरिचित और अनजाने लोगों से बात करते हुए देखता तो प्रतीक्षा करता रहता यहां तक कि आप अपनी बात खत्म करें ताकि वह उनके पास जाए, फिर उनसे पूछता कि मुहम्मद ने तुम से क्या कहा है? अगर वह तुम्हें कोई चीज़ सफेद बताए तो समझो कि वह काली है और वह तुम से रात कहे तो वास्तव में वह दिन है। कहने का मकसद यह है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो चीज़ भी कहते वह उसका विरोध करता था और लोगों को उसके बारे में शक में डालता था। अबू लहब की मृत्यु से दस साल पहले कुरआन की एक सूरत उतरी जिसका नाम सूरतुल मसद है, यह सूरत बतलाती है कि अबू लहब आग (नरक) में जाएगा, यानी दूसरे शब्दों में उसका अर्थ यह हुआ कि अबू लहब कभी भी इस्लाम में प्रवेश नहीं करेगा।

मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को झूठा साबित करने के लिए पूरे दस सालों के दौरान अबू लहब को केवल यह करना चाहिए था कि वह लोगों के सामने आ कर कहताः मुहम्मद मेरे बारे में यह कहता है कि मैं शीघ्र ही आग (नरक) में जाऊंगा, किन्तु मैं अब यह घोषणा करता हूं कि मैं इस्लाम स्वीकार करना चाहता हूं और मुसलमान बनना चाहता हूं। अब तुम्हारा क्या विचार है क्या मुहम्मद अपनी बात में सच्चा है या नहीं? क्या उसके पास जो वह्य आती है वह ईश्वरीय वह्य है?

किन्तु अबू लहब ने ऐसा बिल्कुल नहीं किया जबकि उसका सारा काम पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का विरोध करना था लेकिन उसने इस मामले में आप का विरोध ा नहीं किया। यह कहानी गोया यह कह रही है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अबू लहब से कहते हैं कि तू मुझ से घृणा करता है और मुझे खत्म कर देना चाहता है। ठीक है मेरी बात का तोड़ करने का तेरे पास अच्छा अवसर है! किन्तु पूरे दस साल के बीच उसने कुछ नहीं किया न तो वह इस्लाम लाया और न ही कम से कम दिखाने के लिए इस्लाम कबूल किया।

दस साल तक उसके लिए यह अवसर था कि एक मिनट में इस्लाम को खतम कर दे। किन्तु यह बात मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात नहीं थी बल्कि उस हस्ती की ओर से वह्य थी जो गैब (परोक्ष) को जानती है और उसे पता था कि अबू लहब कभी भी इस्लाम नहीं लायेगा।

अगर यह अल्लाह की ओर से वह्य न होती तो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस बात को कैसे जान सकते थे कि जो कुछ सूरत में बताया गया है अबू लहब उसको साबित कर दिखायेगा? अगर उन्हें यह पता नहीं होता कि यह अल्लाह की ओर से वह्य है तो वह पूरे दस साल तक इस बात पर दृढ़ता और विश्वास के साथ काइम न रहते कि उनके पास जो चीज़ है वह सत्य है। जो आदमी इस तरह का चैलेंज रखता है उसके पास केवल यही एक अर्थ होता है कि यह अल्लाह की ओर से वह्य है।

अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला, नई दिल्ली और अहले हदीस मंज़िल जामा मस्जिद दिल्ली के दोनों इतिहासिक और महान निमार्ण कार्यों के सिलसिले में

एक और खुशखबरी व अपील और हर तरह के सहयोग का इंतिज़ार

सम्माननीय शुभचिंतको! अहले हदीस मंज़िल जामा मस्जिद दिल्ली में चौथी मंज़िल का काम शुरू हो चुका है और अहले हदीस कम्पलैक्स की दूसरी मंज़िल की ढलाई का काम मालियात की कमी की वजह से रूका हुआ है। इन हर दो महान और इतिहासिक कामों में हर व्यक्ति से शिद्दत के साथ तात्कालिक सहयोग की आवश्यकता है। यह आपके लिये सद-क़्-ए जारिया रहेगा।

इमतिहां है तेरे ईसार का कुर्बानी का

इस एकाउन्ट पर रकम भेजें।

A/c Name : Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind
A/c No. 629201058685 (ICIC Bank)
Chandni Chowk, Delhi-110006
(RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292)

4116, बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली-6
Ph. 23273407, Fax : 23246613

अपील : सदस्यगण, मर्कज़ी जमीअत अलहे हदीस हिन्द

इस्लाम धर्म अम्न व शान्ति का झण्डावाहक

सईदुर्रहमान सनाबिली

इस्लाम दया करूणा और अम्न व शान्ति का धर्म है, इस्लाम ने सिसक्ती इन्सानियत को सुख और संतोष की दौलत दी। पीड़ित को उसका अधिकार दिया, अत्याचारी को अत्याचार से रोका, यतीमों, बेवाओं और मोहताजों की देख भाल की, परेशान हाल, अधिकार से वंचित, बीमार के साथ हमदर्दी मुहब्बत व सहायता और सांत्वना की शिक्षा दी, लड़ाई झगड़ों से मुक्ति दिलायी। इस्लाम ने एक निर्दोष इन्सान के कत्ल को पूरी मानवता के कत्ल के समान करार दिया है, दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करने का हुक्म दिया है। मुस्लिम और गैर मुस्लिम पड़ोसियों के अधिकार अदा करने और उनके समाजी मामलात में हमदर्दी और शुभचिंतन पर बल दिया है। अत्याचार को हर तरह से हराम करार दिया है। इस्लाम ने अपने अनुयाइयों को इस्लाम के प्रचार की इजाज़त तो दी है लेकिन धर्म के मामले में किसी पर जबरदस्ती करने पर रोक लगा दी है।

इस्लाम अम्न व शान्ति और सुलह समझौते का सबसे बड़ा वाहक है इसका अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि कुरआन ने ऐसे अल्लाह का तसव्वुर पेश किया है जो कृपालू और दयालू है और कुरआन ने ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० का परिचय इन शब्दों में कराया है ''और हमने आपको पूरे संसार के लिये दया आगार बना कर भेजा है'' इस्लाम ने बिना भेदभाव सबसे प्रेम का पाठ सिखाया है जिसमें कदम कदम पर अल्लाह से प्रेम, ईश्दूत हज़रत मुहम्मद से प्रेम, मुसलमानों से प्रेम, पूरी मानवता से प्रेम यहां तक कि अल्लाह की पूरी सृष्टि से प्रेम की शिक्षा दी गयी है।

इस लेख में उन यथार्थ का उल्लेख किया गया है जिससे मालूम होता है कि इस्लाम धर्म अम्न का वाहक और शान्ति का प्रचारक है और हिंसा, अतिवाद, आतंकवाद का सबसे बड़ा विरोधी है।

अत्याचार निन्दित कार्य है, अल्लाह तआला न्याय को पसन्द करता है और अत्याचार को अप्रिय समझता है क्योंकि अत्याचार अम्न व शान्ति व्यवस्था को भंग कर देता है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''और अल्लाह अत्याचारियों को पसन्द नहीं करता है'' (सूरे आले इमरान-५७)

संसार में अत्याचार करने वाले क्यामत के दिन अल्लाह के प्रकोप के शिकार होंगे। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''और चूंकि तुमने दुनिया में जुल्म किया था, इसीलिये आज तुम्हारी यह बात तुम्हें कोई भायदा नहीं पहुंचाएगी तुम सब अज़ाब में शरीक हो'' (सूरे जुख़रूफ ३९)

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमायाः खबरदार! जिस किसी ने किसी जिम्मी पर अत्याचार किया या उसकी तनकीस (उसके अधिकार में कमी) की या उसकी ताकत से बढ़कर उसे किसी बात का मुकल्लफ किया या उसकी हार्दिक खुशी के बगैर कोई चीज़ ली तो क्यामत के दिन मैं उसकी तरफ से पक्षकार बनूंगा। (अबू दाऊद

३०५२, अल्लामा अलबानी ने इस हदीस को सहीह करार दिया है)

अल्लाह तआला फितना और फसाद फैलाने वालों को कदापि पसन्द नहीं करता है वह अम्न व शान्ति को पसन्द करता है कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है "अल्लाह की दी हुयी रोज़ी से खाओ और पियो और ज़मीन में फसाद न करते फिरो"। (सूरे बक़रा ६०)

कुरआन में अल्लाह तआला कहता है "और कोई आदमी ऐसा होता है जिसकी बात दुनियावी जिन्दगी में आपको पसन्द आ गयी और अल्लाह को अपने दिल की सच्चाई पर गवाह बनाता है हालांकि वह बदतरीन झगड़ालू होता है और वह जब आपके पास से लौटता है तो वह ज़मीन में फसाद फैलाने की कोशिश करता है और खेतों और मवेशियों को हलाक करता है और अल्लाह फसाद को पसन्द नहीं करता है"। (सूरे बकरा २०४-२०५)

इस्लाम धर्म की बुनियाद ही नर्मी और आसानी पर है। इस धर्म में किसी भी तरह की मामूली जबरदस्ती की गुंजाइश नहीं है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है "दीन के मामले में किसी तरह की जबरदस्ती नहीं है"। (सूरे बकरा २५६)

कुरआन की इस आयत में अल्लाह ने स्पष्ट रूप से बता दिया है कि किसी भी इन्सान को इस्लाम धर्म में दाखिल होने के लिये मजबूर नहीं किया जा सकता।

इस्लाम के इतिहासिक अध्ययन करने से यह बात सपष्ट हो जाती है कि जब भी मुसलमान किसी शहर या एलाके में गये तो वहां के लोगों को इस्लाम पर मजबूर नहीं किया बल्कि उन्हें अपने धर्म पर बाकी रहने का अधिकार दिया जिससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इस्लाम अम्न व शान्ति का झण्डावाहक है।

इस्लाम ने इन्सानी जानों को अत्यंत सम्माननीय करार दिया है। इसका अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि उसने इन्सानी जान की हत्या को पूरी मानवता के कत्ल के समान करार दिया है कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है।

"इसी लिये बनी इस्राईल पर जो शरीअत नाजिल की उसमें हमने लिख दिया था कि जो कोई किसी जान को बगैर किसी जान के बदले या बिना मुल्क में फ़साद करने की सजा के मारता है वह गोया तमाम लोगों को कत्ल करता है और जिसने किसी नफ्स (प्राण) को जीवित रखा तो उसने गोया सब लोगों को जिन्दा रखा है"। (सूरे माइदा ३२)

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया जिस शख्स ने मुआहिद को कत्ल किया वह जन्नत की खुश्बू तक नहीं पायेगा और यकीनन उसकी खुश्बू चालीस साल की दूरी तय करने पर महसूस की जाती है। (बुखारी ३१६६)

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया यहूदी ईसाई और मुआहिद की दिय्यत एक मुसलमान की दिय्यत की तरह है। मुसन्नफ अब्दुर्रज्जाक ९७,९८/१)

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया इन्सानों के अधिकार के सिलसिले में क्यामत के दिन सबसे पहले नाजायज खून बहाने के बारे में प्रश्न होगा। (सहीह बुखारी ८६६४)

इस्लाम में किसी भी धर्म के धर्म गुरूओं के कत्ल को हराम करार दिया गया है। अब्दुल्लाह बिन अब्बास बयान करते हैं कि ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया

गददारी न करना, धोका न देना, लाशों को अपमानित न करना, बच्चों और पादरियों को कत्ल न करना। (मुसनद अहमद २७३८ मुसन्नफ इब्ने अबी शैबा ३३३२ मुस्नद अबू याला २५४६)

अल्लाह ने कुरआन में किसी के पूज्य को गाली देने से सख़्ती से रोका है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है "और ऐ मुसलमानो! तुम उन लोगों को गालियां न दो जो अल्लाह के अलावा को पुकारते हैं इसलिये कि वह बिना जाने समझे ज्यादती करते हुये अल्लाह को गाली देंगे"।

यह हकीकत है कि एक इन्सान जिस की वह उपासना करता है तो वह उससे अथाह मुहब्बत करता है और अपने पूज्य को दुनिया की तमाम चीज़ों के मुकाबले ज्यादा चाहता है इसलिये जब कोई किसी के पूज्य (माबूद) को बुरा भला कहेगा तो दूसरा भी बदले में दूसरे के माबूद को गाली देगा जिससे समाज में अशान्ति होने की शंका है इसी लिये इस्लाम में दूसरों के पूज्यों को बुरा कहने से रोका गया है। ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने एक बार चूटियों के बिल को देखा कि उसे जला दिया गया है तो आपने कहा आग से अजाब देने का अधिकार आग के रब के अलावा किसी के लिये वैध नहीं है। (सुनन अबू दाऊद २६७५ अल्लामा अलबानी ने इस हदीस को सहीह करार दिया है)

इस हदीस से आप अन्दाजा लगायें कि जब इस्लाम में एक दुख देने वाले जानदार को आग से जलाना हराम है तो फिर इन्सान को जलाना कैसे जायज और दुरूस्त हो सकता है? इसी तरह से इस्लाम में जानवरों के अधिकारों से संबनधित जो शिक्षाएं हैं अगर उनका निष्पक्ष हो कर अध ययन किया जाए तो हक़ीक़त स्पष्ट हो जाती है कि इस्लाम हर प्राणी के अधिकारों का ख्याल रखने पर बल देता है और किसी भी जानदार को सताने को महा पाप क़रार देता है।

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द की पत्रिकाओं का सदस्य बनाने के लिये सहयोग करें।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द अपने अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर है। जमीअत के तीन आर्गन निरंतर प्रकाशित हो रहे हैं।

जरीदा तर्जुमान पाक्षिक (उर्दू) 150 वार्षिक

इस्लाहे समाज मासिक (हिन्दी) 100 वार्षिक

दी सिम्पल ट्रुथ मासिक (अंग्रेज़ी) 100 वार्षिक

खुद भी पढ़ें और दूसरों को खरीदार बनवायें। यह एक मिशन है जिसको कामयाब बनाना हम सब की संयुक्त ज़िम्मेदारी है।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया

हज़रत मुआज़ बिन जबल रजिअल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि मुझ से रसूल स०अ०व० ने फरमाया जिस शख्स का आखिरी कलाम ''लाइलाहा इल्लल्लाह'' हो वह जन्नत में जायेगा। (अबू दाऊद ३११६)

❑ अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजिअल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि मैंने रसूल स०अ०व० को फरमाते हुए सुना कि जिस किसी मुसलमान के मरने पर चालीस ऐसे आदमी जनाज़े की नमाज़ पढ़ा दें जो अल्लाह के साथ शिर्क न करते हों तो अल्लाह तआला उनकी सिफारिश उसके हक़ में कुबूल करता है। (मुस्लिम-६४८)

❑ अबू हुरैरा बयान करते हैं कि रसूल स०अ०व० ने फरमाया जो शख्स किसी के जनाज़े में नमाज़ की अदायगी तक शामिल रहे तो उसे एक कीरात के बराबर सवाब मिलेगा। पूछा गया कि कीरात का क्या अर्थ है तो आप ने फरमायाः दो बड़े पहाड़ अर्थात नमाज़े जनाज़ा और तदफीन तक साथ रहने वाला दो बड़े पहाड़ों के बराबर सवाब लेकर वापस लौटेगा। (सहीहुल बुखारी १३२५, सहीह मुस्लिम ६४५)

❑ हज़रत अनस रजिअल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि आपने फरमाया क्यामत की निशानियों में से है कि इल्म उठा लिया जायेगा, जाहिलियत बढ़ जायेगी और शराब पिया जायेगा ज़िना (व्याभिचार) आम हो जायेगा। (बुखारी-मुस्लिम)

हज़रत आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि रसूल स०अ०व० ने महल्लों में मस्जिदें बनाने उन्हें पाक साफ और खुश्बूदार रखने का हुक्म दिया है। (अबू दाऊद)

❑ जिसने अल्लाह की खुशी के लिये मस्जिद बनायी तो अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत में वैसा ही घर बनायेगा। (बुखारी-४५०)

❑ मुहम्मद स० ने फरमायाः जब तुम्हारा गुज़र जन्नत के बागों में से हो तो उसके फल खाओ। हज़रत अबू हुरैरा रजिअल्लाहो अन्हो ने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल! जन्नत के बाग कौन से हैं? तो मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया कि मस्जिदें हैं।

❑ मुहम्मद स०अ०व० ने फरमायाः मोमिन की मौत के बाद उसके कर्म और अच्छे कामों से जिसका उसे सवाब मिलता है वह सात हैं। इल्म जो उसने दूसरों को सिखाया और फैलाया २. नेक लड़का ३. कुरआन मजीद, जिसका किसी को इल्मी वारिस बनाया। ४. मस्जिद जिसने बनवायी ५. घर जो मुसाफिरों के लिये बनवाया। ६. नहर ७. सदक़ा जो अपनी जिन्दगी में स्वस्थ होने की हालत में दिया। इन सात कामों का सवाब मौत के बाद भी इन्सान को मिलता रहता है।

❑ ❑ ❑

(प्रेस रिलीज़)

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के कार्यकर्ता डा० मुहम्मद शीस इदरीस तैमी को सदमा

दिल्ली ३१ अक्टूबर २०२०

मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी के अखबार के नाम जारी एक बयान के अनुसार मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के कार्यकर्ता और मीडिया कोआरडीनेटर मुहम्मद शीस इदरीस तैमी के पिता का ३१ अक्टूबर को सुबह दस बजे पैतृक भूमि करहटिया दरभंगा बिहार में ६० साल की आयु में अचानक निधन हो गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

आप अत्यंत चरित्रवान, मिलनसार, नमाज़ व रोज़ा के पाबन्द और नेक सीरत इन्सान थे। आपने औलाद की दीनी अन्दाज़ में बेहतरीन तालीम व तर्बियत की। गरीबों, मोहताजों के साथ सौहार्दपूर्ण व्यवहार और हर संभव मदद भी करते थे। वह मेहमानों और ओलमा के कद्रदां और रिश्ते-नाते का ख्याल रखने वाले मोमिन थे। नूरानी चेहरा और पवित्र चरित्र के साथ नेक दिल और भले इन्सान थे हर मिलने वाला उनके सदाचार, नर्म स्वभाव और मिलनसारी से प्रभावित होता था। मैंने निजी तौर पर उनसे कई मुलाक़ातें की थीं वह आज कल की दुनिया की बहुत से झमेलों और झंझटों से काफी दूर थे। डा० मुहम्मद शीस इदरीस तैमी की शिक्षा जामिया इमाम इब्ने तैमिया चन्दन बारा बिहार वगैरह जैसे खालिस दीनी संस्थाओं में दिलाई वह आलिम फाज़िल बने और आधुनिक यूनीवर्सिटियों से एम. फिल और डाक्ट्रेट की डिगरी विशिष्ट नम्बरात से हासिल की। आप कई किताबों के लेखक, अच्छे कलमकार और हर फन मौला हैं, अरबी में अच्छी योग्यता होने के साथ उर्दू साहित्य और तक़रीर व तहरीर में बेहतरीन दक्षता व महारत रखते हैं। यह सब मां बाप की दुआओं, बेहतरीन प्रशिक्षण और अध्यापकों की मेहनत निस्वार्थता और निर्देशों का परिणाम है। मरहूम के सुपुत्रों में अन्य पाचों भाई भी बहुत सी खूबियों के मालिक हैं। अल्लाह तआला इन सबको मरहूम के लिये सद-क-ए जारिया बनाये।

गम व शोक की इस घड़ी में, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी, महा सचिव मौलाना मुहम्मद हारून सनाबिली, कोषाध्यक्ष अल हाज वकील परवेज़, अन्य पदधारीगण और जमीअत के समस्त कार्यकर्ता पसमांदगान के गम में बराबर के शरीक हैं और दुआ करते हैं कि अल्लाह उनकी मग्फिरत फरमाए और जन्नतुल फिरदौस में जगह दे और पसमाँदगान को सबरे जमील की क्षमता दे। आमीन

पसमांदगान में छः बेटे मुहम्मद अलक़मा, मौलाना अब्दुल अल्लाम, हाफिज़ मुहम्मद अबू शहमा अध्यक्ष जिला औक़ाफ कमीटी दरभंगा, डा० मुहम्मद शीस इदरीस तैमी, मास्टर मुहम्मद हनज़ला तैमी और इंजीनियर मुहम्मद जुनैद, चार बेटियां, पोते पोतियां और निवासे निवासियां हैं जो उनकी दीनी व इल्मी तर्बियत के निशान हैं। क़ल सुबह तदफीन अमल में आएगी।

प्यारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

वह बिजली का कडका था या सौते हादी
अरब की ज़मी जिसने सारी हिला दी
नई इक लगन सबके दिल में लगा दी
इक आवाज़ में सोती बस्ती जगा दी
पड़ा हर तरफ गुल यह पैग़ाम हक़ से
कि गूंज उठे दश्त व जबल नाम हक़ से
सबक़ फिर शरीअत का उनको पढ़ाया
हक़ीक़त का गुर उनको इक इक बताया
ज़माना के बिगड़े हुओं को बनाया
बहुत दिन के सोते हुओं को जगाया
खुले थे न जो राज़ अब तक जहां पर
वह दिखाला दिये एक परदा उठाकर
किसी को अजूल का न था याद पैमां
भुलाये थे बन्दों ने मालिक के फरमां
ज़माना में था दौर सहबाये बुतलां
मये हक़ से महरूम थी बज़्मे दौरां
अछूता था तौहीद का जाम अब तक
खामे मारिफत का था मुंह खाम अब तक
ना वाक़िफ थे इंसां क़ज़ा व जज़ा से
न आगाह थे मबदा व मुंतहा से
लगाई थी इक इक ने लौ मा सिवा से
पड़े थे बहुत दूर बन्दे खुदा से
यह सुनते ही थर्रा गया गल्ला सारा
यह राई ने ललकार कर जब पुकारा
कि है ज़ात वाहिद इबादत के लाइक़
जुबां और दिल की शहादत के लाइक़

उसी के हैं फरमां इताअत के लाइक़
उसी की है सरकार खिदमत के लाइक
लगाओ तो लौ अपनी उससे लगाओ
झुकाओ तो सर उसके आगे झुकाओ
उसी पर हमेशा भरोसा करो तुम
उसी के सदा इश्क का दम भरो तुम
उसी के गज़ब से डरो गर डरो तुम
उसी की तलब में मरो जब मरो तुम
मुबर्रा है शिर्कत से उसकी खुदाई
नहीं उसके आगे किसी की बड़ाई

(हाली)

शब्द अर्थ

सौते हादी-राह दिखलाने वाले की आवाज़

दश्त व जबल-जंगल और पहाड़

राज़-भेद

अज़ूल का पैमा मुराद वह वाकेआ जब आलमे मिसाल में अल्लाह पाक ने इनसान से अलस्तो बिरब्बिकुम फरमाकर इक़रार लिया था।

सहबाए बुतलां-झूठ की शराब अर्थात झूट का दौर दौरा

तौहीद का जाम- अल्लाह को एक मानने का अक़ीदा

खमे मारिफत- हक़ की पहचान का घड़ा जिस का मुंह अभी बन्द था

कज़ा व जज़ा- क्यामत का दिन (फैसला और बदला)

मबदा-शुरुआत

मुन्तहा-आखिरी

राई- चरवाहा

मुबर्रा-पाक

शिर्कत- साझीदार बनाना

राबिआ बसरी बिन्ते मौलाना उबैदुल्लाह मैमन

इस्लाम और सदाचार

आपसी अधिकार और समाज के रिश्तों को पर समता, न्याय, हमदर्दी के आधार पर स्थापित करने के लिये दो चीज़ें बहुत ज़रूरी हैं। एक कानून और दूसरे नैतिकता। हम लोगों की जमाअती ज़िन्दगी और पूरी दुनिया का सुख और अम्न व शान्ति की निर्भरता भी इसी पर है कि एक इन्सान का दूसरे इन्सान से संपर्क और संबन्ध बनाने में एक दूसरे के अधिकारों का ख्याल और सम्मान रखे इसके विपरीत करने से घाटा ही घाटा है जब कि नैतिकता किसी भी इन्सान के अन्तरात्मा की आवाज़ होती है। दुनिया के सभी ध र्मों ने अपना आधार नैतिकता पर रखा है। इस धरती पर जितने भी पैगम्बर और समाज सुधारक आए सबने नैतिकता और भलाई करने की शिक्षा दी है। इस अध्याय में इस्लाम की शिक्षाएं अपनी एक अलग पहचान रखती हैं। हकीकत तो यह है कि पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नबी बना कर भेजने का सबसे पहला मक़सद इन्सानी समाज की इस्लाह और मानव-स्वभाव का प्रशिक्षण और एकेश्वरवाद की शिक्षा के सिवा कुछ न था। एक अवसर पर पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने स्वयं फरमाया कि मेरे नबी बना कर भेजे जाने का मूल मक़सद यह है कि मैं लोगों के स्वभाव और चरित्र को दुरूस्त करूं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने सहाबा किराम को नमाज़ रोज़ा और एक अल्लाह की इबादत करने के साथ अपने साथियों के सामने यह शिक्षा अवश्य पेश करते थे कि अगर अल्लाह तआला की खुशी और सामीप्ता चाहते हो तो अपनी आदतों को संवारों और अच्छे आचरण वाले बनो क्योंकि अल्लाह के नज़दीक अच्छा आचरण और किरदार बहुत प्रिय है। इस्लाम अच्छे आचरण को ईमान की पहचान क़रार देता है यही वजह है कि जिसके आचरण जितने ज़्यादा अच्छे होंगे उसका ईमान उतना ही मज़बूत और उसकी इबादत और उपासना उतना ही ज़्यादा स्वीकार्य होगी। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सबसे अच्छा और पूर्ण ईमान वाला वह शख्स है जिस का आचरण और व्यवहार और बात करने का अन्दाज़ अच्छा हो। अच्छा आचरण एवं सदव्यवहार पाप को उसी तरह धो डालता है जैसे पानी शरीर को और दुराचार नेक कर्मों को इस तरह ख़राब कर देता है जैसे सिरका शहद को (इब्ने माजा) पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला को अपने बन्दों में सबसे ज़्यादा प्रिय वह है जिस का स्वभाव और आदत अच्छी हो।

एकेश्वरवाद और पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सन्देशवाहक मानने के बाद सबसे बड़ी खूबी सदाचार है यानी हर इन्सान से दिल खोल कर मुलाकात करना, भली बात बोलना, किसी का भला चाहना, लेकिन अफसोस है कि आज हम लोग इन तमाम खूबियों को भूलते जा रहे हैं।

इस्लाम में नारी का स्थान

मौलाना खुर्शीद आलम मदनी

शादी-विवाह इन्सान के लिये अल्लाह तआला की तरफ से एक बहुत बड़ी नेमत है, यह एक पवित्र बन्धन और खूबसूरत संधि है इसी के माध्यम से दो खानदान मुहब्बत की डोर में बंध जाते हैं नस्लें बढ़ती हैं, पवितत्रता हासिल होती है और एक सभ्य समाज वजूद में आता है।

शादी-विवाह अल्लाह की निशानियों में से एक निशानी भी है कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः और उसकी कुदरत की निशानियों में से यह भी है कि उसने तुम्हारी ही जिन्स से बीवियां बनाई ताकि तुम उनके पास सुकून पाओ और तुम्हारे बीच मुहब्बत और करूणा पैदा की'' (सूरे रूम-२१)

बीवी अगर नेक मिल जाती है तो यह अपने शौहर के लिये सुख का माध्यम और कीमती पूंजी होती है। नेक बीवी की निगाह शौहर के दीन से लगाव और उसके चरित्र व आचरण पर भी होती है क्योंकि यही परिवारिक जीवन में सफलता की बुनियाद है वह शौहर (पति) को नेक बनाती है और उसके चरित्र की सुरक्षा करती है। नेक बीवी पति के राज की सुरक्षा करने के साथ खानदान के माहौल को शान्तिपूर्ण और सुखद बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ऐसे लोग बड़े सौभाग्यशाली हैं जिन की बीवियां हैं जो नेकी और अच्छे कामों में पति की मदद करने के साथ गुनाह से रोकने का काम करती हैं। इस नेमत पर इन्सान को अपने रब का शुक्र अदा करना चाहिए। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नेक बीवी के बारे में फरमाते हैं।

''पूरी दुनिया लाभ उठाने की चीज़ है और दुनिया की बेहतरीन पूंजी नेक बीवी है'' इसी तरह पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शादी में नेक औरत को वरीयता देने का हुक्म दिया है। ''किसी औरत से चार बुनियादों पर निकाह किया जाता है उसके माल की वजह से, उसके खानदान की वजह से, उसकी खूबसूरती की वजह से और उसके दीन की वजह से, लेकिन तुम दीनदार औरत से शादी करके कामयाब हो जाओ। (सहीह बुखारी)

हदीस का अर्थ यह है कि ज़्यादातर लोग शादी के वक़्त माल देखते हैं, खूबसूरती देखते हैं, खानदान देखते हैं लेकिन इस हदीस में दीनदार और नेक औरत से विवाह करने का उपदेश और आदेश दिया गया है ताकि जीवन सफल रहे।

परिवारिक जीवन की शुरूआत मियां बीवी के पवित्र दाम्पत्य संबन्ध ा से होता है और यह संबन्ध उसी वक़्त तक सुखद रह सकता है जब दोनों एक दूसरे के अधिकारों का ख्याल रखें। पति की जिम्मेदारी है कि वह भी अपनी बीवी के खर्च और खान पान वगैरा का हर तरह से ख्याल रखे इसी तरह बीवी की भी जिम्मेदारी है कि वह भी अपने शौहर के अधिकारों का ख्याल रखे। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया ''औरत अपने पति के घर और उसके बच्चों की संरक्षक और निगरां है''। (सहीह बुखारी)

भलाई और सफलता की राह

मौलाना अबुल कलाम आज़द रह०

मां बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो, रिश्तेदारों के अधिकारों से ग़ाफिल न हो, गरीबों, मुसाफिरों और पड़ोसियों की देख भाल करते रहो, पड़ोसी चाहे रिश्तेदार हो चाहे अजनबी, हर हाल में अच्छे व्यवहार का पात्र है। इसी तरह जो तुम्हारे साथ उठने बैठने वाले हों और गुलाम जो तुम्हारे अधीन हैं उनके भी तुम पर अधिकार हैं। ज़रूरी है कि सबके साथ मुहब्बत और भलाई से पेश आओ।

कंजूसी न करो, अल्लाह ने जो कुछ दिया है उसके बन्दों की सेवा में ख़र्च करो, जो शख्स अल्लाह पर ईमान रखता है उसका हाथ अल्लाह की राह में खर्च करने से कभी नहीं रूक सकता, लेकिन जो कुछ खर्च करो अल्लाह के लिये करो, दिखावे के लिये न करो।

सामूहिक जीवन में सिस्टम और सफलता का मूल सिद्धांत यह है कि जो जिस बात का हक़दार हो, उसके हक़ (अधिकार) का एतराफ करो और जो चीज़ जिसे मिलनी चाहिए वह उसके हवाले कर दो, वारिस का हक़ दो, यतीम का माल दो, कर्जदार का कर्ज दो, एमानत रखने वाले की एमानत दो, क्षमता रखने वाले के लिये पद दो, जो जिस का हक़ हो और जो जिस का सक्षम हो उसे मिलना चाहिए।

मुसलमानों को चाहिए कि दुनिया की कोई चीज़ उन्हें सच कहने से न रोक सके, अगर किसी मामले में सच्चाई खुद उनकी ज़ात के खिलाफ हो उनके मां बाप और रिश्तेदारों के खिलाफ हो, जब भी उन्हें सच बात ही कहनी चाहिए वह सिर्फ सच्चाई ही के लिये दिल व जुबान रखते हैं।

कुरआन की सूरे माइदा में साफ साफ फरमाया गया है कि "ऐसा न हो कि किसी गरोह की दुश्मनी तुम्हें इस बात के लिये उभारे कि उसके साथ इन्साफ न करो, हर हाल में इन्साफ करो कि यही तक़वा से लगती हुई बात है और अल्लाह की नाफरमानी के नताइज से डरो तुम जो कुछ करते हो वह इसकी खबर रखने वाला है"।

दूसरों के मामले में उनका सिद्धांत यह होना चाहिए कि नेकी के कामों में सबकी मदद करें, बुराई के काम में किसी की मदद न करें, कोई जुल्म करे तो यह बुराई है, इससे बचें, कोई हज को जाए तो यह भलाई है उसके सहायक बनें। अर्थात नेकी और परहेज़गारी के हर काम में सहयोग, गुनाह और जुल्म की हर बात में असहयोग हर मुसलमान के लिये बुनियादी कार्य है।

सफलता की राह सच्ची खुदा परस्ती और नेक कामों वाली जिन्दगी से हासिल होती है। असल चीज़ दिल की पवित्रता और नेक अमल है। अल्लाह का कानून यह है कि हर व्यक्ति को वही पेश आता है जो उसने अपने अमल से कमाया है, न तो एक की नेकी दूसरे को बचा सकती है और न एक के कुकर्म के लिये दूसरा जवाबदेह हो सकता है। ***(रहमते आलम पृष्ठ ११५-११८ सारांश)***

इस्लाम में अनाथों के अधिकार

मौलाना अब्दुल रऊफ नदवी

संदेष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः यतीम (अनाथ) के लिये मेहरबान बाप की तरह बनो (अल अदबुल मुफ़रद)

यही वजह है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अनाथों से मुहब्बत करते थे और उनके साथ अच्छा व्यवहार करने का हुक्म देते थे।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुसलमानों का सबसे अच्छा घर वह है जिसमें किसी यतीम बच्चे के साथ भलाई की जा रही है और सबसे खराब घर वह है जिसमें किसी यतीम बच्चे के साथ बुरा व्यवहार किया जा रहा हो। (मिश्कात ४६७३)

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चहेती बेटी हज़रत फातिमा रजिअल्लाहो तआला अन्हा की हालत यह थी कि चक्की पीसते पीसते हथेलियां घिस गयी थीं और पानी भर भर कर लाने की वजह से सीने पर दाग पड़ गये थे, उन्होंने एक दिन आप से अपने लिये एक खादिम की मांग की। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जवाब दिया कि ऐ फातिमा बदर के यतीम तुम से पहले यह मांग कर चुके हैं। एक दूसरी रिवायत में यह भी है कि ऐ फातिमा सुफ्फा के गरीबों का अब तक कोई प्रबन्ध नहीं हो पाया है तो तुम्हारी मांग कैसे पूरी करूं?

यतीम की देख रेख और उससे प्यार मुहब्बत का बर्ताव करना बड़ा पुण्य का काम है। अल्लाह तआला कुरआन में फरमाता है ''यतीम पर गुस्सा न करो और न भिखारी को झिड़को'' (सूरे जुहा)

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो अल्लाह के लिये किसी यतीम के सिर पर मुहब्बत से हाथ फेरेगा तो उसके हाथ के नीचे जितने बाल आयेंगे, हर बाल के बदले में उसको पुण्य मिलेगा। (मुस्नद अहमद)

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मैं और यतीम का संरक्षक और दूसरे बेसहारा लोगों के संरक्षक जन्नत में पास पास रहेंगे। (सहीह बुखारी)

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''जो लोग यतीम का माल खा जाते हैं वह हक़ीक़त में अंगारे खाते हैं और ऐसे लोग जहन्नम की आग का ईंधन बनेंगे।

यतीम का माल खाना या उसको बर्बाद करना महा पाप है। ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम है। एक मुसलमान का यह कर्तव्य है कि वह कमजोरों और यतीमों के साथ अच्छा व्यवहार करे और उन पर दया करे और नर्मी से पेश आये, उनके माल की हिफाज़त की जाये और सही जगह खर्च किया जाये।

❑❑❑